शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो०प्रो० हिन्दी
रा०ड०सं०महावि० बुलसनी!
17/06/21
प्रतिनियाँ

जयद्रथ-वध – काव्य

कवि - श्री मैथिलीशरण गुप्त

जिस ज्ञान के बल से अनेकों विपद-नद तरते रहे,
जिस ज्ञान के बल से सदा ही धैर्य तुम धरते रहे,
हे बुद्धिमानों के शिरोमणि! ज्ञान अब वह है कहाँ?
अवलम्ब उसका ही तुम्हें लेना उचित है फिर यहाँ।।

भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण पाण्डवों को समझाते हुए कहते हैं कि मानव जीवन में दुःख-सुख स्थिर रूप से नहीं रहते हैं। दुःख-सुख का चक्र मानव जीवन में चलते रहता है। इसी ज्ञान के कारण संसार में आशा बनी रहती है। दुःखों का अन्त होता है। मानव को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि ज्ञानी अपने ज्ञान की शक्ति के कारण ही अनेकों दुःख रूपी नदियों को तैर कर पार करते हैं। हे युधिष्ठिर इस ज्ञान के बल पर ही तुम अब तक धैर्य धारण करते रहे हो। तुम इस संसार में बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हो। वैसा ज्ञान तो संसार में किसी को भी उपलब्ध नहीं है।

अतः अब तुमको उसी ज्ञान का सहारा लेना है उचित है। इस प्रकार विलाप करना तुमको अब शोभा नहीं देता है। तुम्हें धैर्य से काम लेना है। वर्तमान समय की यही माँग तर्कसंगत है। इसलिए तुम धैर्य धारण करो और आगे की योजना बनाओ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र — डॉ० देवचरण प्रसाद, एसो० प्रो० हिन्दी, सा० उ० सं० महाविद्यालय, पुरखेला, पूर्णियाँ
द्वितीय - भाग - 2 - गद्य खण्ड — 17/06/21
शीर्षक - बातचीत
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

प्रश्न:- लेखक का परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:- उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद में 23 जून 1844 को बेनी-प्रसाद भट्ट तथा पार्वती देवी की बगिया में एक दुर्लभ पुष्प प्रस्फुटित हुआ, जिन्हें हिन्दी साहित्य जगत में बालकृष्ण भट्ट के नाम से जाना जाता है।

प्रारंभिक काल में संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर, 1867 ई० में प्रयाग मिशन स्कूल से इंट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण की उन्होंने प्रयाग मिशन स्कूल से अध्यापन कार्य शुरु कर कायस्थ पाठशाला इंटर कॉलेज में अध्यापक का सफर पूरा किया। भट्टजी ने 'हिन्दी प्रदीप' नामक पत्रिका के माध्यम से सामाजिक, साहित्यिक-नैतिक-राजनीतिक रूप से मानवता की सेवा की। बालकृष्ण भट्ट आधुनिक हिन्दी गद्य के निर्माता, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग के प्रमुख साहित्यकार, महान पत्रकार, निबंधकार तथा हिन्दी की आधुनिक आलोचना के प्रवर्तकों में अग्रगण्य हैं। बालकृष्ण भट्ट 20 जुलाई 1914 ई० को पंचतत्व में विलीन हो गए।

बालकृष्ण भट्ट के साहित्य का सबसे प्रमुख विषय है- राष्ट्रीय जागरण एवं समाज सुधार। सामयिक समस्याओं के साथ बाल विवाह, स्त्री शिक्षा, कृषकों की दुरावस्था, अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, देश सेवा आदि इनके लेखन का विषय था। कलात्मक निबंध उनके निबंधकार व्यक्तित्व और निबंध कला के साथ-साथ भाषा शैली को भी प्रतिबिंबित करता है। आधुनिक हिन्दी आलोचक के रूप में भट्ट जी ने धर्म और दर्शन को सामाजिक विकास की कसौटी पर कसकर प्रगतिशील आलोचना की नींव डाली थी। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान-एक सुजान, शिशुपाल वध, नल दमयन्ती, सीता वनवास, भट्ट निबंधमाला हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

Ajanta
Page No.
Date

रमनन्दन जी परिवार से विद्रोह करके अपना घर छोड़ दिया। वे पत्नी के साथ अलग झोपड़ी बना-कर रहने लगे। पंडित मिश्र शुद्ध सेवा के लिए गाँधी जी के कहने पर परिवार से विद्रोह करके स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्रदान करने में अहम भूमिका निभायी है।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निबंधमाला' गद्य भाग

शीर्षक - 'गाँधीजी और मैं'

लेखक - पंडित रामनन्दन मिश्र

डॉ० देव शरण प्रसाद
एसो० प्रो०
का० सिं० सं० वि० वि० दरभंगा,
17/06/21 प्रभारी

प्रश्न :- 'गाँधीजी और मैं' शीर्षक संस्मरणात्मक निबंध का लेखक क्यों विद्रोही बन गया, प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'गाँधीजी और मैं' शीर्षक निबंध के लेखक पंडित रामनन्दन मिश्र कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर जब घर आये तो उनके मन में पर्दा प्रथा के विरोध की बात उठी। उन्होंने कुछ नौजवानों को इकट्ठा किया और इस प्रथा का किस प्रकार विरोध किया जाए इस पर विचार-विमर्श हुआ। विचार सबों को अच्छा लगा परन्तु इसकी शुरुआत कौन करे, एक बहुत बड़ी समस्या थी। श्री मिश्र ने स्वयं इसका बीड़ा उठाया और परिवार के साथ उनका संघर्ष प्रारम्भ हो गया। उनके पूज्य पिता सहित परिवार का कोई भी व्यक्ति इस बात के लिए तैयार नहीं था कि रामनन्दन जी की पत्नी घर से बाहर निकले। बहुत दिनों तक घर वालों का डराने-धमकाने का काम होता रहा परन्तु लेखक ने एक न मानी। गाँधी जी को भी इसमें बीच-बचाव करना पड़ा। उन्होंने रामनन्दन जी की पत्नी को पढ़ाने के लिए राधाबाई तथा दुर्गाबाई को इनकी पत्नी के घर पर भेजा। इसी समय राधाबाई के पिता का मदनलाल जी का पटना में निधन हो गया और पटना वासियों ने पर्दा प्रथा के विरोध का आन्दोलन तेज कर दिया। गाँधीजी ने रामनन्दन जी से कहा आप अपनी पत्नी राजकिशोरी जी को साबरमती आश्रम भेज दें। राजकिशोरी जी अनुग्रह बाबू के साथ साबरमती आश्रम भेज दी गईं।

लेखक का अपने परिवार के साथ घोर संग्राम छिड़ गया। बहुत प्रयास करने पर भी पिता और पुत्र में बात नहीं बनी। गाँधी जी ने पंडित मिश्र को पत्र के माध्यम से यह सन्देश दिया कि विद्रोही-पुत्र को पिता के धन की आशा नहीं रखनी चाहिए।

शेष आगे-